ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-3* June- 2021
Anthology : The Research

पुष्टि मार्गीय वल्लभ सम्प्रदाय के कला परिवेश आभरण परम्परा

Pushti Margiya Vallabh Sampradaya's Art Ambient Tradition

Paper Submission: 15/06/2021, Date of Acceptance: 25/06/2021, Date of Publication: 26/06/2021

ममता ब्यास
प्रवक्ता,
चित्रकला विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
कोटा, राजस्थान, भारत

सारांश

आज से 500 वर्ष पूर्व पुष्टिमार्गीय वल्लभ सम्प्रदाय का उद्‌गम हुआ था । श्री आचार्य श्री महाप्रभुजी ने जन मानस तक इस धर्म को घर–घर पहुचानें में गुरु दीक्षा के बाद ठाकुर जी की सेवा प्रणाली के माध्यम से सभी वैष्णव जन तक सेवा प्रणाली को ठाकुर जी की सेवा में कार्यरत किया है । बिना गुरु दीक्षा के ठाकुर जी की सेवा नहीं की जा सकती । वर्तमान में इसका प्रचलन इस प्रकार है पर हमे ग्रंथो व दर्शनों व चित्रांकन के व्दारा ज्ञात होता है । सेवा स्वरूप की विशेषताओं के आधार पर प्रमुख रूप से सभी जन मानस को आत्मारूपी स्वरूप व्दारा श्री ठाकुर जी की दर्शन ब्रह्मास्वरूप चित्रण में पहनावा एवं आभरण में जागृत करना है ।

The Pushtimargiya Vallabh sect originated 500 years ago from today. Shri Acharya Shri Mahaprabhuji has employed the service system to reach all the Vaishnavites through the service system of Thakur Ji, after the Guru's initiation, to take this religion from door to door to the masses. Thakur ji cannot be served without Guru Diksha. Presently its trend is as follows, but we get to know through texts and philosophies and drawings. On the basis of the characteristics of the form of service, mainly all the public mind is to be awakened in the form of soul by the form of soul, in the form of Lord Shri Thakur ji, in the portrayal of Brahma in the form of dress and garb.

मुख्य शब्द : पुष्टि मार्गीय वल्लभ सम्प्रदाय, ललित कला, चित्ररंजकता।
Confirmed Margiya Vallabh Sampradaya, Fine Art, Painting.

प्रस्तावना

पुष्टिमार्गीय वल्लभ सम्प्रदाय ठाकुर जी की सेवा भाव स्वरूप है ठाकुर जी को नित्य प्रतिदिन ठाकुर जी श्रृंगारित आभरण से सुशोभित सोंदर्यपूर्ण सेवा की जाती है । भारतीय महीनो की तिथियों के अनुसार इनके स्वरुप के अनुसार आभरण, वस्त्र ग्रहण करवाने की परम्परा निहित है । उत्सवों व त्योहारों का विशेष महत्व है । ठाकुर जी भी उत्सवों त्योहारों के अनुसार वस्त्र पहनाएं जाते है । प्रत्येक पद विशेष पहनावे को श्रीजी को सभी वैष्णवजन के घर–घर में एक ही जैसे आभरण व श्रृंगार किया जाता है यह पद्धति लागू करने में श्री

वाल्भाचार्य जी का अनुरोध है । सेवा भाव से ठाकुर जी की छवि को सुन्दर आभरणों व पहनावे के अनुसार मनमोहित ढंग से धराया जाता है ।

पुष्टिमार्ग में कला परिवेश का समान्य परिचय

500 वर्ष से उद्गम पुष्टिमार्गीय वैष्णव जन के व्दारा ठाकुर जी के आभरण व पहनावे की परम्परा को बड़े ही सुन्दर ढंग से ग्रंथो व दर्शनों में दर्शाया गया है "पुष्टि– विलास" ग्रन्थ से सभी आवरणों को उत्सवो त्योहारों व पाटोत्सव व मनोरथो के आधार पर आँखों से सुन्दर आभा को बिखेरा गया है।" शुद्धाद्वैत ब्रह्मावाद " की दार्शनिक पृष्ठ भूमि है । पुष्टि भक्ति के अनुसार श्री आचार्य चरण ने निःसाधन देवीय जीवों के लिए सेवा मार्ग प्रकट किया है। भगवान आनन्द मन्द पूर्ण पुरुषोत्तम श्री कृष्ण जी की विभिन्न लीला भावना अनुसार जो सरस सेवा का प्रकार है वह भावलोक की चरम उपलब्धि है ।

भूमिका

पुष्टिमार्गीय सेवा को प्रयोगात्माक तथा रूप रेखा चित्रांकन के माध्यम से चित्रकला में ईश्वरीय सृष्टि की अनुपम छटा को बिखेरने वाली अभिव्यक्ति है घर–घर मंदिर की शोभा से शोभायमान रहने लगा प्रभु की कृपा का यह मार्ग विश्व में विलक्षणता के शिखर पर सभी दार्शनिको व्दारा जाना गया है। श्रीकृष्ण भगवान आचार्य रूप में अवतरित होकर तब "शुद्धाद्वैत ब्रह्मावाद" की स्थापना करते है और शाश्वत सत्य की जगह में प्रकाशमान करते है ।

काव्यांश

पुष्टि वल्लभ सम्प्रदाय के शोध अध्ययन में श्री ठाकुर जी स्वरूप की सेवा भाव के रूप में श्री जी का पहनावे में वर्गीकरण

1. ऋतू अनुसार
2. रूपाकृति सज्जा अनुसार
3. 15 दिन का पखवाडा अनुपात
4. अष्ट सखा की झाकी अनुसार
5. नित्य सेवा प्रकार
6. सचित्र श्रृंगार पहनाने की योजना अनुसार
1. रथयात्रा का उत्सव
2. हरियाली अमावस्या का उत्सव
3. पवित्रा एकादशी का उत्सव
4. राखी का उत्सव
5. राधाष्टमी का उत्सव

दशहरा इत्यादि उत्सवो में पहनावा व आभरण धराया जाता है ।

भारतीय संस्कृति में पुष्टिमार्गीय परम्परा एक एसी दशा में नैराश्य निमग्न जनो की भक्ति को रस सरिता से अवगाहन कराकर उन्हें श्री जी की भक्ति में सोंदर्य व श्रृंगार के व्दारा आधुनिक वातावरण में समकालीन किया गया है।

अनुसन्धान विधि एवं प्रारूप

अनुसन्धान एक विशेष प्रकृति की सोंदर्यात्मक अनुभूति है प्रकृति के अनुसंधान के कई माध्यम है जैसे एतिहासिक अनुसंधान वर्णात्मक प्रयोगात्मक आदि में अनुसंधान के माध्यम चित्रांकन एवं रेखांकन को आधार मानकर ग्रंथो व साक्षात्कार में माध्यम से जानकारी प्राप्त की है जिस प्रकार अपने बालक का पालन पोषण करते है उसी प्रकार श्री ठाकुर जी को लाड लड़ाना है ।

शोध का उदेश्य

ललित कला ऐसी कला है जिसमे चित्ररंजकता व रूपांकित अध्यन कला की भौतिक एवं प्रतिष्ठा एवं सोंदर्य व्दारा आत्म केन्द्रित होकर सुख का अनुभव कराता है चित्रकला सोंदर्य सृष्टि की अनोखी कला है जो सम्पूर्ण सृष्टि की अनुभूति है ।

वल्लभ सम्प्रदाय जिसमे जन जन तक सेवा प्रणाली को सेवा स्वरुप में चित्रांकन करना मेरे शोध का उदेश्य है ।

शोध का महत्व

अज्ञात तथ्यों को जानना ही शोध है चित्र कला में शोध का उतना ही महत्व है चित्रकला में दिन प्रतिदिन कई नए प्रयोगों व्दारा जनरुचि के अनुसार नये आयामों में परिवर्तित किया है पुष्टि वल्लभ सम्प्रदाय वैष्णव जन को श्री वल्लभाचारी ने जाग्रत किया है । कलाकारों व्दारा श्री ठाकुर जी के अंग की सेवा प्रणाली सभी जन को सेवार्थी व्दारा अनुसरण करना शोध की महत्ता है ।

उपलब्ध साहित्य की पूर्व समीक्षा

वर्तमान युग में कहा गया है की कलयुग के देवता श्रीनाथ जी (गिरिराज धरण) उन्ही को ध्यान में रखकर अत्यधिक सोंदर्यमय छटा को ऋतु अनुसार आभरण व श्रृंगारित आभरण को गोवर्धन पर्वत पर विराजमान करके बालक ने मुरली मनोहर के माथे की चंद्रिका, गुंजन का गले में हार के भाव प्रधानता से सेवा प्रणाली में उद्गम किया गया है यह जन मानस तक अवतरित किया है । यह साहित्य के आधार पर महत्वपूर्ण है ।

निष्कर्ष

पुष्टिमार्गीय वल्लभा सम्प्रदाय के इस शोध में अध्ययन के निष्कर्ष स्वरूप यह बताया गया है की मुरली मनोहर की पाग, उपरना, धोती व श्रृंगार आभूषण को धार्मिक व सांस्कृतिक दोनों का रूप सोंदर्य व लावण्य आलौकिकता भावनात्मकता तथा जिव का जगत में सेवा स्वरुप की खूबियां और महत्वपूर्ण विशेषताए जागृत करना है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *शुद्धाव्दैत वेदांत – श्री गिरिधर गोपाल कृत*
2. *"वल्लभाख्यान" – श्रीगोपाल दास कृत*
3. *पुष्टि–विलास – श्री पुरषोत्तम साहित्य*
4. *प्रकाशन एवं सेवा संस्थान कोटा (राजस्थान)*
5. *नित्य स्तोत्र एवं पद संग्रह – वैष्णव मित्र मण्डल सार्वजानिक न्याज इंदौर*
6. *श्री वल्ल्लभ चिंतन – श्री कल्याण राय प्रभु*